पाठ 12

*मार्च 15 - 21

प्रेम और न्याय: दो महानतम आज्ञाएँ
(Love and Justice: The Two Greatest Commandments)

सब्त दोपहर

इस सप्ताह के अध्ययन के लिए पढ़ें: मती 22:34-40, जकर्याह 7:9-12, भजन 82, मीका 6:8, मती 23:23-30, लूका 10:25-37।

याद वचन : "यदि कोई कहे, 'मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ,' और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उस ने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता" (1 यूहन्ना 4:20)।

जौभी कि हमें विश्वास है कि परमेश्वर आखिरकार सब कुछ पुन:बहाल करेगा, यह अभी भी मायने रखता है कि हम बतौर मसीही यहाँ पर और अभी क्या करते हैं। हालाँकि ऐसे कई अन्याय और बुराइयाँ हो सकती हैं जिन्हें परमेश्वर अब नहीं मिटाएगा (ब्रह्मांडीय संघर्ष के मापदंडों के कारण), इसका मतलब यह नहीं है कि कम से कम जो भी पीड़ा और बुराई हमारे सामने आती है उसे कम करने में मदद नहीं किया जा सकता है। जिस भी हद तक संभव हो मदद मिलेगी। वास्तव में, मसीही होने के नाते हम एक दूसरे को मदद करने के लिए भी बाध्य हैं।

*सब्त, मार्च 22 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

जैसा कि हमने देखा है, प्रेम और न्याय एक साथ चलते हैं; वे अविभाज्य हैं। परमेश्वर को न्याय प्रिय है। तदनुसार, यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो हम न्याय से भी प्रेम करेंगे।

इसी प्रकार, यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो हम एक दूसरे से भी प्रेम करेंगे। एक-दूसरे से प्रेम करने का एक हिस्सा अपने आस-पास के लोगों की भलाई के लिए चिंता साझा करना है। जब दूसरे लोग गरीबी, उत्पीड़न या किसी भी प्रकार के अन्याय से पीड़ित हों, तो हमें चिंतित होना चाहिए। जब दूसरों पर अत्याचार हो तो हमें आंखें नहीं बंद करनी चाहिए। इसके बजाय, हमें खुद से पूछना चाहिए कि हम परमेश्वर के प्रेम और न्याय को इस तरह से आगे बढ़ाने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से क्या कर सकते हैं, जो हमारी टूटी हुई दुनिया में हमारे प्रभु की धार्मिकता और प्रेम के आदर्श चरित्र को दर्शाता है।

रविवार **मार्च 16**

दो महानतम आज्ञाएँ

हमारी दुनिया में परमेश्वर के प्रेम और न्याय को आगे बढ़ाने के लिए हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से क्या कर सकते हैं, इस पर विचार करने के लिए, परमेश्वर ने हमें जो आदेश दिया है उस पर ध्यान केंद्रित करके शुरुआत करना उचित है।

मत्ती 22:34-40 पढ़ें। यीशु ने व्यवस्थापक के प्रश्न का उत्तर कैसे दिया?

स्वयं यीशु के अनुसार, "पहला और महान आज्ञा है" "तू अपने परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख," और यीशु आगे कहता है, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।" "हालाँकि, ये आज्ञाएँ अकेली नहीं हैं। यीशु आगे निर्देश देते हैं: "इन दो आज्ञाओं पर सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार हैं" (मत्ती 22:37-40)। दरअसल, वे स्वयं पुराने नियम से उद्धृत हैं।

मत्ती 19:16-23 पढ़ें। धनवान युवा शासक के प्रश्नों पर यीशु के उत्तर मती 22 में व्यवस्थापक के प्रश्न के उसके उत्तरों से कैसे संबंधित हैं?

यहाँ पर क्या हो रहा था? यीशु ने इस व्यक्ति को वैसा उत्तर क्यों दिया? जीवन में हमारी स्थिति या हालात की परवाह किए बिना, इन मुलाकातों से हम सभी को क्या सीख मिलनी चाहिए?

"मसीह ने एकमात्र शर्तें कहीं जो शासक को वहाँ स्थिर कर सकती थीं जहाँ वह एक मसीही चरित्र को परिपूर्ण कर सके। उसके शब्द ज्ञान के शब्द थे, हालाँकि वे गंभीर और सटीक लगते थे। उन्हें स्वीकार करना और उनका पालन करना ही शासक के उद्धार की एकमात्र आशा थी। उसका ऊंचा पद और उसकी संपत्ति उसके चरित्र पर बुराई का सूक्ष्म प्रभाव डाल रही थी। यदि इन चीजों को पोषित किया जाए, तो वे अपने स्नेह में परमेश्वर का स्थान ले लेंगे। परमेश्वर से थोड़ा या बहुत कुछ दूर रखने का अर्थ उस चीज को अपने पास रखना था जो उसकी नैतिक शक्ति और दक्षता को कम कर देगी; क्योंकि अगर इस दुनिया की चीजों को महत्व दिया जाए, भले ही वे कितनी भी अनिश्चित और अयोग्य क्यों न हों, वे सर्व-अवशोषित हो जाएंगी।" - एलेन जी व्हाइट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 520.

यद्यपि हमें अपना सब कुछ बेचने को नहीं कहा जा सकता, जैसा कि इस अमीर युवा शासक को कहा गया था, यदि आप त्याग करना नहीं चाहते हैं, तो आप व्यक्तिगत रूप से किस चीज से चिपके रहे हैं, जो आपके शाश्वत विनाश का कारण बन सकता है?

सोमवार **मार्च 17**

दो सबसे बड़े पाप

स्वयं यीशु के अनुसार, दो सबसे बड़ी आज्ञाएँ परमेश्वर के प्रति प्रेम और एक दूसरे के प्रति प्रेम हैं। और इन आज्ञाओं को पूरा करने में ऐसे बलिदान शामिल हैं जो स्पष्ट रूप से दूसरों के प्रति प्रेम दर्शाते हैं, जो वास्तव में यीशु के नक्शेकदम पर चलने के बारे में है।

अब, यदि दो सबसे बड़ी आज्ञाएँ परमेश्वर के प्रति प्रेम और दूसरों के लिए प्रेम हैं, तो दो सबसे बड़े पाप क्या हैं?

भजन 135:13-19 पढ़ें। यह उस सामान्य पाप के बारे में क्या प्रकट करता है जिस पर पूरे पवित्रशास्त्र में जोर दिया गया है?

पुराना नियम लगातार सबसे ऊपर परमेश्वर के प्रति प्रेम के महत्व पर जोर देता है (देखें व्यवस्थाविवरण 6:5)। इसका मूर्तिपूजा के महान पाप से गहरा संबंध है, जो परमेश्वर के प्रति प्रेम के विपरीत है।

जकर्याह 7:9-12 पढ़ें। इस अनुच्छेद में भविष्यवक्ता जकर्याह के अनुसार, परमेश्वर किस चीज की निंदा करता है? मूर्तिपूजा के पाप का दो महान आज्ञाओं से क्या संबंध है?

यह केवल मूर्तिपूजा नहीं है जिसका उत्तर परमेश्वर प्रेम के क्रोध से देता है, बल्कि यह अपने लोगों के साथ दुर्व्यवहार है, चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक। परमेश्वर अन्याय पर क्रोधित होता है क्योंकि वह प्रेम है।

पुराने नियम में जिन दो महान पापों पर जोर दिया गया है, वे दो महान आज्ञाओं के सापेक्ष विफलताएँ हैं: परमेश्वर से प्रेम करना और एक दूसरे से प्रेम करना। दो सबसे बड़े पाप प्रेम की असफलता हैं। संक्षेप में, यदि आप परमेश्वर से प्रेम नहीं करते हैं और यदि आप दूसरों से प्रेम नहीं करते हैं तो आप आज्ञाओं का पालन नहीं कर सकते हैं।

दरअसल, 1 यूहन्ना 4:20, 21 कहता है: "यदि कोई कहे, मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ, और अपने भाई से बैर रखे, तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उस ने देखा है प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर से जिसे उस ने नहीं देखा, प्रेम कैसे कर सकता है? और हमें उस से यह आज्ञा मिली है, कि जो परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।"

आप यह कैसे समझाएँगे कि परमेश्वर के प्रति प्रेम को दूसरों के प्रति प्रेम से अलग क्यों नहीं किया जा सकता? आप इस अटूट संबंध को कैसे समझते हैं?

परमेश्वर न्याय से प्रेम करता है

पवित्रशास्त्र घोषणा करता है कि परमेश्वर न्याय से प्रेम करता है और बुराई से घृणा करता है (उदाहरण के लिए पढ़ें, भजन 33:5, यशा. 61:8), और वह अन्याय के बारे में गहराई से चिंतित है, जो उन सभी की ओर से धार्मिक आक्रोश पैदा करता है जो अन्याय के शिकार हैं। पूरे पुराने और नए नियम में, परमेश्वर पीड़ा देने वालों और दु:ख का कारण बनने वालों के खिलाफ धर्मी क्रोध व्यक्त करते हुए लगातार पीड़ितों और क्लेशितों के पक्ष में दयाभाव रखता है।

भजन 82 पढ़ें। यह भजन इस संसार में न्याय के लिए परमेश्वर की चिंता को कैसे व्यक्त करता है? आज हमारे लिए इसका क्या अर्थ हो सकता है?

जैसा कि कई टिप्पणीकार इसे समझते हैं, यह अनुच्छेद समाज में अन्याय के लिए जिम्मेदार दोनों सांसारिक शासकों की निंदा करता है और यह एक संदर्भ भी है जब परमेश्वर भ्रष्ट सांसारिक न्यायाधीशों और शासकों (स्पष्ट रूप से राक्षसी ताकतों) के पीछे स्वर्गीय शासकों "संतों" का न्याय करते हैं। विशेष रूप से, शासकों से पूछा जाता है, "तुम कब तक अन्याय करते रहोगे, और दुष्टों का पक्ष करते रहोगे?" (भजन 82:2)।

इसके अलावा, उन पर आरोप लगाया गया है: "कंगालों और अनाथों का न्याय चुकाओ, दीन - दरिद्र का विचार धर्म से करो। कंगाल और निर्धन को बचा लो; दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ" (भजन 82:3, 4)। यहाँ पर और अन्यत्र, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने न्याय के लिए स्पष्ट आह्वान किया। यह पवित्रशास्त्र की कोई परिधीय चिंता नहीं है; यह पूरे पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं के संदेश और यीशु ने देह में रहते हुए क्या कहा, इसका केंद्र है।

यह कोई रहस्य नहीं है कि परमेश्वर उन लोगों से क्या चाहता है और उनसे क्या अपेक्षा करता है जो उससे प्रेम करने और उसकी आज्ञा मानने का दावा करते हैं। वह मीका 6:8 (और अन्यत्र इसी तरह के अनुच्छेदों में) में

बहुत स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करता है: "हे मनुष्य, उस ने तुझे दिखाया है, कि क्या अच्छा है; और यहोवा तुम से इसके सिवा और क्या चाहता है, कि तुम न्याय से काम करे, और दया से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?"

यह भावना पूरे पवित्रशास्त्र में प्रतिध्वनित होती है। उदाहरण के लिए, यीशु ने कहा: "यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35 की 1 यूहन्ना 4:8-16 से तुलना करें)।

यदि हम मीका 6:8 पर ध्यान केंद्रित करें और जानबूझकर इसे शब्द और कार्य दोनों में अभ्यास में लाएँ तो हमारे परिवार और चर्च कैसे दिखेंगे? किसी भी संदर्भ में, इन सिद्धांतों के अनुप्रयोग को बेहतर ढंग से कैसे प्रकट किया जा सकता है?

बुधवार **मार्च 19**

न्याय स्थापित करने हेतु आह्वान

पवित्रशास्त्र में भविष्यवक्ता समाज में न्याय के लिए परमेश्वर की पुकार को लगातार उजागर करते हैं। बार-बार, धर्मशास्त्र अन्याय और उत्पीड़न के मुद्दों को उजागर करने से पीछे नहीं हटता। वास्तव में, न्याय स्थापित करने के लिए परमेश्वर का आह्वान स्वयं न्याय स्थापित करने के लिए परमेश्वर की पुकार थी।

उदाहरण के लिए, भविष्यवक्ता यशायाह उस समय इस्राएल में हो रहे अन्याय के बारे में कुछ भी नहीं कहता। उसके शब्द और न्याय की पुकार आज हमारे कानों में जोर से और स्पष्ट रूप से गूंजनी चाहिए। "भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो, उपद्रवी को सुधारो; अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का मुकदमा लड़ो" (यशा. 1:17)। इसके अलावा, वह उन लोगों के खिलाफ "हाय" की घोषणा करता है जो "अधर्मी आदेश देते हैं" "तुम दण्ड के दिन और उस विपत्ति के दिन जो दूर से आएगी क्या करोगे? तुम सहायता के लिये किसके पास भाग कर जाओगे? तुम अपने वैभव को कहाँ रख छोड़ोगे?" (यशा. 10:3)।

इसी तरह, भविष्यवक्ता यिर्मयाह परमेश्वर के संदेश की घोषणा करता है: "हाय उस पर जो अपना घर अधर्म और अपनी कोठरियाँ अन्याय

से बनाता है, जो अपने पड़ोसी की सेवा बिना मजदूरी लेता है और उसे उसके काम के बदले कुछ नहीं देता। . . . क्या तुम्हारा पिता खाता-पीता नहीं था, और न्याय और धर्म नहीं करता था? तब उसके साथ सब ठीक था। उसने गरीबों और जरूरतमंदों का न्याय किया; तब तो सब ठीक था। क्या यह मुझे नहीं जानता था? "प्रभु कहता है" (यिर्म. 22:13, 15, 16)।

मत्ती 23:23-30 पढ़ें। यीशु यहाँ पर क्या सिखाना चाहता है कि सबसे महत्वपूर्ण क्या है? आप क्या सोचते हैं कि जब वह "महत्वपूर्ण मामलों" का उल्लेख करता है तो उनका क्या मतलब होता है?

ऐसा न हो कि कोई यह सोचे कि अन्याय केवल पुराने नियम के नबियों के लिए चिंता का विषय था, हम यहाँ पर और यीशु की सेवकाई में अन्यत्र स्पष्ट रूप से देखते हैं कि यह स्वयं मसीह के लिए अत्यंत चिंता का विषय था। जैसा कि वह कहता है: "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! क्योंकि तुम पोदीना, सौंफ, और जीरा का दशमांश तो देते हो, और व्यवस्था की गम्भीर बातों अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को टाल देते हो। ये तुम्हें करना चाहिए था, -----" (मत्ती 23:23)। लूका के समानांतर अनुच्छेद में, यीशु ने अफसोस जताया कि वे "न्याय और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हैं" (लूका 11:42)।

यदि आप आज "महत्वपूर्ण मामलों" पर ध्यान केंद्रित करते, तो वह "पुदीना और सौंफ और जीरा का दशमांश" के विपरीत कैसा दिखता, जिस पर हम ध्यान केंद्रित कर रहे होंगे?

गुरुवार **मार्च 20**

मेरा पड़ोसी कौन है?

लूका के वृत्तांत में, यीशु द्वारा परमेश्वर के प्रति प्रेम और पड़ोसी के प्रति प्रेम की दो सबसे बड़ी आज्ञाओं की घोषणा के ठीक बाद, एक व्यवस्थापक ने, ''अपने आप को सही ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, 'तो मेरा पड़ोसी कौन है?' (लूका 10:29). इसके जवाब में, यीशु अच्छे सामरी का अब-परिचित, लेकिन फिर चौंकाने वाला दृष्टांत बताता है।

लूका 10:25-37 में भले सामरी का दृष्टांत पढ़ें। दया और न्याय के लिए नबियों की पुकार और पूरे मानव इतिहास में विभिन्न लोगों के समूहों द्वारा "दूसरों" पर किए गए अन्याय के प्रकाश में यह अनुच्छेद क्या कह रहा है?

यीशु ने सिर्फ न्याय की बात नहीं की; वह इसे बहाल करने आया था। वह भविष्यसूचक आह्वान और न्याय की लालसा की पूर्ति था और भविष्य में भी रहेगा (यशायाह 61:1, 2 के प्रकाश में लूका 4:16-21 देखें)। वह सभी राष्ट्रों की इच्छा है, विशेषकर उन लोगों की जो उद्धार की अपनी आवश्यकता को पहचानते हैं।

शत्रु के बिल्कुल विपरीत, जिसने सत्ता पर कब्जा कर लिया और परमेश्वर के सिंहासन को हड़पने की कोशिश की, यीशु ने स्वयं को नीचे गिरा दिया और उन लोगों के साथ सहभागी हुआ जो पाप, अन्याय और उत्पीड़न के अधीन थे, और उसने स्वयं को प्रेम में समर्पित करके दुश्मन को हरा दिया। न्याय को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए जो न्यायी है और सभी विश्वास करने वालों का न्याय करने वाला है। हम उस नियम के बारे में चिंतित होने का दावा कैसे कर सकते हैं जिसे बनाए रखने के लिए मसीह की मृत्यु हुई, यदि हम इस बारे में चिंतित नहीं हैं कि मसीह नियम के महत्वपूर्ण मामलों को क्या कहता है?

भजन 9:8, 9 घोषणा करता है, "वह जगत का न्याय धर्म से करेगा, और देश देश के लोगों का न्याय सीधाई से करेगा। यहोवा पिसे हुओं का शरणस्थान, और संकट के समय में शरण बनेगा।" इसी तरह, भजन 146:7-9 में कहा गया है, परमेश्वर "क्लेशितों का न्याय करता है" और "भूखों को भोजन देता है।" यहोवा बन्दियों को स्वतन्त्रता देता है। यहोवा अन्धों की आंखें खोल देता है; यहोवा गिरे हुओं को उठाता है; यहोवा धर्म से प्रेम रखता है। यहोवा परदेशियों पर दृष्टि रखता है; वह अनाथों और विधवाओं को छुटकारा देता है; परन्तु वह दुष्टों की चाल उलट देता है।"

इस संबंध में परमेश्वर का वचन कितना स्पष्ट हो सकता है कि हमें अपने आस-पास के उन लोगों की सेवा कैसे करनी चाहिए जो जरूरतमंद हैं और दुखी हैं?

जरूरतमंदों तक पहुँचने के बारे में हम यीशु के जीवन और सेवकाई से क्या सीख सकते हैं? भले ही हम उसके जैसा चमत्कार नहीं कर सकते, फिर भी कई आहत लोगों के लिए हमारी मदद को पर्याप्त "चमत्कारी" कैसे माना जा सकता है?

शुक्रवार **मार्च 21**

अतिरिक्त विचार: एलेन जी. व्हाइट की पुस्तक द डिजायर ऑफ एजेस में, "द सब्त," पेज 281-289 पढ़ें।

"स्वयं को कठिनाई में फँसाने के डर से, जासूसों ने भीड़ की उपस्थिति में मसीह को उत्तर देने का साहस नहीं किया। वे जानते थे कि उसने सच कहा था। अपनी परंपराओं का उल्लंघन करने के बजाय, वे एक व्यक्ति को पीड़ित होने के लिए छोड़ देंगे, जबकि वे एक जानवर को राहत देंगे क्योंकि अगर इसकी उपेक्षा की गई तो मालिक को नुकसान होगा। इस प्रकार मनुष्य की तुलना में जो परमेश्वर की छवि में बनाया गया है एक मूक जानवर के लिए अधिक परवाह दिखाई गई। यह सभी झूठे धर्मों की कार्यप्रणाली को दर्शाता है। ये सब मनुष्य की खुद को परमेश्वर से ऊपर उठाने की इच्छा से उत्पन्न होते हैं, लेकिन वे मनुष्य को जानवर से भी नीचे गिरा देते हैं। प्रत्येक धर्म जो परमेश्वर की संप्रभुता के विरुद्ध युद्ध करता है, वह मनुष्य की उस महिमा की ठगी करता है जो सृष्टि के समय उसकी थी, और जिसे मसीह में उसे पुन: प्राप्त किया जाना है। प्रत्येक झूठा धर्म अपने अनुयायियों को मानवीय आवश्यकताओं, कष्टों और अधिकारों के प्रति लापरवाह होना सिखाता है। सुसमाचार मसीह के लहू की खरीद के रूप में मानवता को उच्च मूल्य देता है, और यह मनुष्य की इच्छाओं और संकटों के प्रति कोमल सम्मान सिखाता है। यहोवा कहता है, 'मैं मनुष्य को कुन्दन से, और आदमी को ओपीर के सोने से भी अधिक महँगा करूँगा" यशा. 13:12.

"जब यीशु ने फरीसियों से यह प्रश्न पूछा कि क्या सब्त के दिन भला करना या बुरा करना, जीवन बचाना या मारना उचित है, तो उसने उनका सामना उनके ही दुष्ट उद्देश्यों से किया। वे कटु घृणा के साथ उसके जीवन का शिकार कर रहे थे, जबकि वह जीवन बचा रहा था और लोगों में

खुशियाँ ला रहा था। क्या सब्त के दिन हत्या करना बेहतर था, जैसा कि वे करने की योजना बना रहे थे, बजाय इसके कि पीड़ितों को ठीक किया जाए, जैसा उसने किया था? क्या परमेश्वर के पवित्र दिन पर सभी मनुष्यों के प्रति प्रेम की तुलना में हृदय में हत्या करना अधिक धार्मिक है, जो दया के कार्यों में व्यक्त होता है?" – एलेन जी. व्हाइट, द डिजायर ऑफ एजेस, पृष्ठ 286, 287.

चर्चागत प्रश्न:

1. यह क्यों और कैसे सत्य है कि "प्रत्येक झूठा धर्म अपने मानने में मानवीय आवश्यकताओं के प्रति लापरवाह होना सिखाता है"? हम अपने चर्च समुदायों और उसके बाहर ऐसी लापरवाही से बचने के लिए जानबूझकर कैसे कार्य कर सकते हैं?

2. मेरा पड़ोसी कौन है? आपका पड़ोसी कौन है? किस व्यावहारिक तरीके से मसीह का अनुसरण हमें उस सामरी की तरह करना चाहिए जिसने प्रेम का प्रदर्शन करने के लिए अपने समय की सीमाओं को पार कर लिया?

3. यदि परमेश्वर को न्याय और दया पसंद है, तो हमें परमेश्वर के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीजों के अनुसार कैसे कार्य करना चाहिए? हम उस पर अधिक ध्यान कैसे केंद्रित कर सकते हैं जिसे यीशु ने "व्यवस्था के महत्वपूर्ण मामले" कहा था?

4. जब हम न्याय के बारे में सोचते और बात करते हैं, तो हम कितनी बार इस बात पर जोर देते हैं कि यीशु जिस प्राथमिक तरीके से न्याय पर चर्चा करता है, वह इस संदर्भ में है कि क्या और किस हद तक हम सक्रिय रूप से दूसरों से, विशेषकर पीड़ितों और वंचितों से प्रेम करते हैं? मती 25:31–46 के प्रकाश में इस पर विचार करें।